सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का तृतीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक महिला विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'संस्कृत साहित्यकार महिलाएँ'** नामक लेख में वैदिक काल व मध्यकाल में नारियों की स्थिति तथा कुछ प्रमुख महत्वपूर्ण संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध महिलाओं का वर्णन है। तत्पश्चात् प्रतिभा गर्ग द्वारा लिखित **'ब्रह्मवादिनी के कर्तव्य'** लेख में वैदिक संहिताओं में नारी के गौरव पूर्ण इतिहास को स्पष्ट करते हुये ब्रह्मवादिनी नारीयों के इतिहास पर प्रकाश डाला है। तत्पश्चात् डॉ. सुभद्रा जोशी द्वारा लिखित **'नारी सम्बन्धी कतिपय शब्दों की व्युत्पत्ति** नामक लेख में नारी शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुये उससे सम्बन्धित कतिपय शब्दो की व्युत्पत्ति व अर्थ को संहिताओं' के माध्यम से स्पष्ट किया है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित ' **मन्त्रदृष्टा नारी- अपाला** ' नामक लेख में मन्त्रदृष्टा और ब्रह्मवादिनी अपाला के जीवन चरित, उसके जीवन में आने वाली कठिनाईयाँ तथा स्वयं के तपोबल से अपनी विपत्तियों को दूर करने का वर्णन किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा